Artistic Narration Vol. XVI No. 1 Jan.-June 2025 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 8.898 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.011

भारतीय लोक संगीत पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव

तनु शर्मा
शोधार्थिनी
डॉ0 भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
ईमेलः *tanuparijiya@gmail.com*

प्रो0 अनिता रानी
पर्यवेक्षक, श्रीमती बी0डी0 जैन गर्ल्स
पी0जी0 कॉलेज, आगरा
ईमेलः*dr.anita80@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 25.04.2025
Approved: 25.05.2025

तनु शर्मा
प्रो0 अनिता रानी

भारतीय लोक संगीत पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव

Artistic Narration 2025, Vol. XVI, No. 1, Article No.11 pp. 077-082

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.011*

सारांश

भारत एक विशाल एवं विविधतापूर्ण देश है। यहाँ की संस्कृति सदियों पुरानी है। संगीत प्रारम्भ से ही यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। भारत में संगीत के विविध रूप देखने को मिलते हैं जैसे– शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत व लोक संगीत आदि। भारत में लोक संगीत को सबसे पुराना संगीत माना जाता है। लोक संगीत का निर्माण मानव संस्कृति के विकास के साथ ही हुआ है। भारत में लोक संगीत की विविधता देखने को मिलती है। यहाँ कई धर्मों एवं जातियों के लोग एक साथ निवास करते हैं जिनकी अपनी–अपनी भाषा एवं बोली है। यहाँ पर क्षेत्र परिवर्तन के अनुसार संस्कृति में परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनूठी लोक संगीत परंपराएँ है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होती आई है। यही लोक संगीत यहाँ की संस्कृति को दर्शाने का कार्य करता है। ढ़ोल, नगाड़े, सारंगी, बांसुरी, ढोलक जैसे पारंपरिक वाद्यों की मधुर ध्वनि तथा सदियों से चले आ रहे पारम्परिक लोक गीतों ने भारतीय जनमानस को सदा से ही प्रेरित किया है। परन्तु इक्कीसवीं सदी में आई डिजिटल तकनीक ने, यहाँ के लोगों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। इस प्रभाव से लोक संगीत का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। वर्तमान समय में स्मार्टफोन, इंटरनेट, डिजिटल रिकॉर्डिंग, सोशल मीडिया तथा संपादन सॉफ्टवेयर जैसी नई तकनीकों ने लोक संगीत के निर्माण करने, प्रसार करने, उपभोग करने तथा संरक्षण करने के तरीकों में अभूतपूर्व परिवर्तन लाये हैं।

मुख्य बिन्दु

लोक संगीत, भारतीय लोक संगीत के विविध रूप, डिजिटल तकनीक का अर्थ, भारतीय लोक संगीत पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव, निष्कर्ष।

तनु शर्मा, प्रो0 अनिता रानी

लोक संगीत :–

लोक संगीत किसी भी देश अथवा प्रांत की सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाने का कार्य करता है। लोक संगीत एक ऐसा दर्पण है जिसमें किसी स्थान विशेष की सांस्कृतिक विशेषताएँ प्रतिबिम्बित होती हैं। लोक संगीत जन–साधारण की भावनाओं से पूरी तरह जुड़ा हुआ होता है। यह एक ऐसा संगीत है जिसे विशिष्ट रूप से सीखा नहीं जाता बल्कि यह पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी एक–दूसरे को हस्तान्तरित होता है। लोक संगीत मानव की संस्कृति एवं परम्पराओं से जुड़े होते हैं अतः प्रत्येक तीज–त्यौहार एवं सामाजिक उत्सवों पर लोक संगीत का आयोजन होता है। लोक संगीत को मानव संस्कृति के प्रारम्भ से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। प्रारम्भ से ही यह मानव की जीवन शैली में समाहित है। मनुष्य प्रारम्भ से ही अपने दैनिक कार्यों को करते हुए कुछ गीतों को गुनगुनाते अथवा गाते थे जिससे उनके मन में नवीन ऊर्जा का संचार एवं खुशी का अनुभव होता था। यह गीत मनुष्य के जीवन में पूर्ण रूप से रचे–बसे होते थे।

लोक संगीत में लोक गीत, लोक वाद्य एवं लोक नृत्य का समावेश रहता है। इन तीनों के मिश्रण को ही लोक संगीत कहा गया है। ''लोक संगीत'' 'लोक' तथा 'संगीत' दो शब्दों के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है– लोक के गीत या लोक अथवा लोगों में प्रचलित गीत।''[1] लोक शब्द का अर्थ वेदों में भी बताया गया है। विद्वानों ने लोक शब्द को संसार, तीनों लोक, सम्पूर्ण दुनियाँ, जनता तथा सांसारिक व्यवहार के अर्थ के रूप में बताया है। लोक संगीत में शास्त्रीय संगीत के समान शास्त्र के नियमों का बन्धन नहीं होता है। यह अत्यन्त सरल प्रकृति का होता है तथा कोई भी व्यक्ति इसे गा सकता है। यह लोगों की भावनाओं को व्यक्त करने का एक सरल माध्यम है। लोक संगीत लोगों की विचारधारा को दर्शाने का माध्यम है। समय एवं काल के अनुसार लोगों की विचारधारा में आये परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप लोक संगीत में भी परिवर्तन आता रहा है। लोक संगीत सामाजिक उत्सवों, त्यौहारों, रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं पर आधारित होते है। लोक गीतों का गायन अधिक्तर शादी–विवाह, जन्म उत्सव, तीज–त्यौहार, फसलों की कटाई व बुवाई तथा प्रेम एवं वेदना के समय किया जाता है। दो–चार स्वरों से निर्मित यह भावप्रधान एवं मधुर गीत, मानव की संस्कृति एवं प्राचीन परम्परा का प्रतिनिधित्व करते है।

भारतीय लोक संगीत के विविध रूप :–

भारत देश सांस्कृतिक विविधता का देश है। यहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक साथ निवास करते हैं। लोक संगीत यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत में विभिन्न प्रांतों के लोक संगीत के माध्यम से उस प्रान्त के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों की झलक देखने को मिलती है। भारत में प्रत्येक क्षेत्र का अपना लोक संगीत है। जो विभिन्न लोक गीतों, वाद्ययन्त्रों एवं लोक नृत्यों से मिलकर बना होता है। लोक गीतों की भाषा क्षेत्रिय भाषा पर आधारित होती है। इन लोक गीतों का गायन सदियों से पारम्परिक रूप से किया जाता रहा है। भारतीय लोक गीत विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं जैसे धार्मिक लोक गीत, सामाजिक लोक गीत, पारम्परिक लोक गीत आदि। भारत में लोक संगीत के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अवनद्ध, सुषिर, घन व तन्त्री वाद्यों का प्रयोग होता है जैसे– झांझ, मंजीरा, चिमटा, ढोलक, वंशी, इकतारा आदि। इन लोक वाद्यों की मधुर ध्वनि लोक संगीत के गायन में विशिष्ट प्रभाव डालती है। भारतीय लोक संगीत में लोक नृत्यों का भी विशिष्ट महत्व है। प्राचीन काल से ही मानव अपने हृदय में उत्पन्न खुशी एवं उत्साह के भावों को नृत्य के माध्यम से व्यक्त करता आया है। भारत में लोक नृत्य का इतिहास

सदियों पुराना है। यहाँ प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवसरों पर लोक नृत्य का आयोजन किया जाता है जैसे– गरबा नृत्य, डांडिया नृत्य, भांगड़ा नृत्य, तथा लावणी नृत्य। भारत में लोक संगीत का क्षेत्र बहुत विस्तृत है अतः इसे प्रान्तीय आधार पर भली प्रकार समझा जा सकता।

उत्तर प्रदेश का लोक संगीत :–

उत्तर प्रदेश राज्य भारत के उत्तर में स्थित है। यहाँ सभी धर्मों के लोग एक साथ निवास करते है अतः यहाँ की संस्कृति एवं संगीत में सभी धर्मों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। भगवान राम एवं कृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण यहाँ भक्ति का भाव प्रबल रूप में दिखाई देता है। उत्तर प्रदेश को दो भागों में बांटा जा सकता है, पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक गीत अधिक्तर अवधी भाषा में गाये जाते हैं। राम जन्म का स्थान होने के कारण उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग राम भक्ति के स्वर में डूबा हुआ दिखाई पड़ता है। यहाँ गली–गली में राम भजन एवं भक्ति संगीत की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग को ब्रज क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। श्रीकृष्ण एवं राधा का जन्म स्थान होने से यह ब्रज प्रान्त सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति एवं लोक संगीत अत्यन्त प्राचीन है। इसका सम्बन्ध पुराणों से माना गया है। यहाँ के लोक संगीत में रासलीला, नौटंकी, स्वांग, कजरी झूला, रसिया, होली, बारहमासा, सोहर, बन्ना तथा सांझी आदि प्रमुख है। रासलीला का सम्बन्ध कृष्ण एवं राधा की लीलाओं से होता है। जिसमें राधा, कृष्ण एवं गोपियों के मध्य प्रेम और आनंद का प्रदर्शन होता है। नौटंकी उत्तर प्रदेश की एक लोक नाट्य शैली है। इसमें नृत्य, संगीत, कथा एवं संवाद का मिश्रण होता है। इसमें अधिक्तर धार्मिक या लोक कथाओं पर आधारित कहानी का मंचन किया जाता है। नौटंकी स्वांग का ही परिवर्तित रूप है। स्वांग के अन्तर्गत किन्हीं सामाजिक प्रसंगों एवं वीर गाथाओं का वर्णन किया जाता है। कजरी गीत सावन के महीने में यहाँ की महिलाओं द्वारा गाया जाता है। झूला गीत का गायन भी सावन के महीने में किया जाता है। उत्तर प्रदेश का लोक गीत चैता का गायन वसन्त ऋतु में किया जाता है। इसी प्रकार रसिया भी यहाँ का प्रसिद्ध लोक गीत है। जिसका सम्बन्ध राधा कृष्ण की लीलाओं से होता है। यहाँ पर जन्म के उत्सव पर गाये जाने वाले गीतों को सोहर तथा शादी–ब्याह के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को बन्ना, बन्नी आदी नामों से जाना जाता है। इनके अतिरिक्त यहाँ विभिन्न त्यौहारों के अवसरों पर भिन्न–भिन्न गीतों का आयोजन किया जाता है जैसे– होली के गीत, दीपावली के गीत, टेसू–झेंझी के गीत आदि। उत्तर प्रदेश के लोक नृत्यों में चरकुला नृत्य विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यह ब्रज क्षेत्र में किया जाने वाला नृत्य है इस नृत्य में महिलाएँ एक मिट्टी के बर्तन को, जिसे चरकुला कहते हैं बजाते हुए या सर पर रख कर नृत्य करती हैं। यहाँ के लोक संगीत के साथ ढ़ोलक, तबला, सारंगी बांसुरी, मंजीरे खंजड़ी आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

पंजाब का लोक संगीत :–

पंजाब प्रान्त की संस्कृति एवम् लोक संगीत आति समृद्ध है। लोक संगीत यहाँ के जीवन का एक अहम हिस्सा है। पंजाब का लोक संगीत भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ के लोक संगीत में प्रमुख है– भांगड़ा, गिद्दा, जुगनी, ढोला, लोरी, टप्पा, घोड़ी, सेहरा, कंगना, चूड़ा चरण, सीठनियाँ, माहिया, किक्की, मिर्जा, हीर–रांझा, झूमर, लुड्डी, किकली आदि। पंजाब में किसी भी खुशी के अवसर पर युवाओं द्वारा भांगड़ा नृत्य किया जाता है। गिद्दा नृत्य यहाँ की युवतियों द्वारा विवाह एवं त्यौहार आदि के अवसर पर किया

जाता है। यह नृत्य ढ़ोलक के साथ किया जाता हैं। जुगनी यहाँ का एक पारंपरिक गीत है यह गीत कहानी के तौर पर गाये जाते हैं। इन गीतों के द्वारा प्रेम, अलगाव एवं विभिन्न सामाजिक मुद्दों के विषयों को दर्शाया जाता है। ढ़ोला गीत पंजाब का एक प्रसिद्ध लोक गीत है इसका गायन मुख्य रूप से युवतियों द्वारा किया जाता है। पंजाब प्रान्त में लोरियों के गायन का विशेष चलन है। लोरियों का गायन छोटे बच्चों को सुलाने के लिए किया जाता है। घोड़ी, सेहरा, कंगना तथा चूड़ा चरण गीतों का संबंध विवाह की रस्मों से है। विवाह की विभिन्न रस्मों के दौरान इन लोक गीतों का गायन किया जाता है। इसी प्रकार सीठनियाँ एवं माहिया गीत भी विवाह की रीतियों से सम्बन्धित हैं। किक्की एक युगल लोक गीत हैं। जिसमें दो लोग हाथ पकड़कर एक दूसरे के चारों ओर घूमते है। पंजाब का मिर्जा नामक गीत यहाँ की लोक कथाओं पर आधारित होता हैं यह पारम्परिक गीत साहस एवं वीरता का परिचायक है। इसमें मिर्जा एवं साहिबा के प्रेम को दर्शाया जाता है। हीर–रांझा गीत भी यहाँ की प्रेम कहानियों पर आधारित होते हैं। यह गीत पंजाब में काफी लोकप्रिय हैं तथा सदियों से यह गीत यहाँ पर गाये जाते हैं। झूमर पंजाब का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इसे विवाह आदि उत्सवों एवं फसल के मौसम के समय किया जाता है। इस नृत्य को मध्यम लय में ढ़ोल के साथ किया जाता है। लुड्डी नृत्य भी पंजाब प्रान्त का एक विशेष नृत्य है। यह नृत्य खुशियों से भरा होता है तथा इसमें छोटी युवतियाँ जोड़ी बनाकर नृत्य करती हैं। इसी प्रकार से किकली नृत्य भी किया जाता है। पंजाब प्रान्त में टप्पे का विशेष महत्व है। यहाँ के लोक गीतों में इसका विशेष स्थान माना जाता है। इसका गायन विशेष रूप से ऊँट चलाने वालों द्वारा किया जाता है। इस गीत में प्रेम, विरह, तथा जीवन के विविध पहलुओं को व्यक्त किया जाता है। पंजाब के लोक वाद्य यन्त्रों में ढोल, चिमटा, सारंगी, अलगोजा तथा ढ़ोलक आदि का प्रयोग किया जाता है।

राजस्थान का लोक संगीत :–

राजस्थान राज्य भारत का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान राज्य की अपनी स्वयं की एक विशिष्ट संस्कृति है। यहाँ का लोक संगीत अति समृद्ध है। यहाँ पर हिन्दी भाषा के अतिरिक्त यहाँ की क्षेत्रिय भाषा बोली जाती है। जिसे राजस्थानी भाषा कहा जाता है। यहाँ पर लोक गीतों का गायन राजस्थानी भाषा में किया जाता है। लोक संगीत यहाँ के लोगों की जीवन शैली में पूर्ण रूप से समाहित है। यहाँ के प्रसिद्ध लोक संगीत में मांड, झूमर, घूमर, गनगौर, ढोला नृत्य, कच्छी घोड़ी, लूर नृत्य, मांदल, लांगुरिया, भवाई, अग्निनृत्य, गैर नृत्य, गीदड़ नृत्य, पूजा नृत्य, चंग या डफ नृत्य आदि प्रसिद्ध हैं। मांड गायन शैली राजस्थान की सबसे प्रसिद्ध गायन शैली है। यह एक श्रृंगार प्रधान गायन शैली है तथा इसे अर्ध शास्त्रीय शैली भी कहा जाता है। घूमर नृत्य राजस्थान का एक विशेष नृत्य है जिसे राजस्थानी महिलाएँ घाघरा एवं घूंघट पहनकर करती हैं। यह राजस्थानी संस्कृति का एक विशेष नृत्य है। झूमर नृत्य भी इसी प्रकार का नृत्य है। कुछ विद्वानों के अनुसार घूमर नृत्य को झूमर के रूप में भी जाना जाता है। गणगौर नृत्य भी राजस्थान प्रान्त का विशिष्ट तथा पारम्परिक नृत्य है। इस नृत्य के दौरान यहाँ की स्त्रियाँ शिव–पार्वती तथा विष्णु–लक्ष्मी आदि के गीत गाती है। इस नृत्य को गौरा एवं शिव के मिलन के प्रतीक के रूप में किया जाता है। राजस्थान का कालबेलिया नृत्य सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। इस नृत्य में महिलाएँ अधिक्तर काले रंग के लंहगा चोली पहनती है। इस नृत्य को अधिक्तर त्यौहारों पर किया जाता है। इस नृत्य के साथ अधिक्तर बीन या पुंगी वाद्ययन्त्र का प्रयोग किया जाता है। राजस्थान प्रान्त के लोक संगीत में कुछ विशिष्ट प्रकार के वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। जैसे– कामायचा, रावणहत्था, मोरचंग, सारंगी, अलगोजा, नागफनी, बांकिया, एवं भपंग आदि।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.011

महाराष्ट्र का लोक संगीत :–

महाराष्ट्र राज्य में लोक संगीत का विशेष महत्व है। यहाँ पर हर धार्मिक उत्सव पर लोक संगीत का आयोजन किया जाता है। लोक गीत यहाँ के ग्रामीण लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है। महाराष्ट्र राज्य के लोक संगीत में लावणी, कोली, भालेरी, पोवाड़ा, तमाशा, ओवी, गोंधल आदि प्रसिद्ध हैं। लावणी नृत्य महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इस नृत्य की शैली अपनी मजबूत लय एवं तीव्र गति के लिए जानी जाती है। लावणी यहाँ का पारंपरिक लोक नृत्य है। इसे ढोलक की थाप पर किया जाता है। कोली लोक गीत महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध गीत है। गीत की इस शैली की उत्पत्ति कोली समुदाय अथवा मछुआरों द्वारा मानी गई है। पोवाड़ा यहाँ के मराठी काव्य की एक विशिष्ट शैली है। पोवाड़ा का अर्थ है महिमा करना। इसका गायन विशिष्ट हस्तियों के कार्यों की महिमा का गान करने के लिए किया जाता है। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र प्रान्त में आध्यात्मिक संगीत से सम्बन्धित विभिन्न गायन शैलियाँ है जैसे– भजन, भरूड़, कीर्तन, गोंधल तथा अभंग आदि।

बंगाल का लोक संगीत :–

बंगाल में लोक संगीत की परम्परा अति समृद्ध है। कुछ शताब्दी पूर्व तक यहाँ का सारा साहित्य पद्यमयी था तथा विभिन्न प्रकार के गीतों को गाने के लिए गायन की भिन्न–भिन्न शैलियाँ थी। बंगाल प्रान्त में ग्रामीण एवं शहरी जन–जीवन में अधिक भिन्नता नहीं देखी जाती इसी कारण यहाँ के ग्रामीण गीतों में विभिन्न रागों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ पर लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का मिश्रण दिखाई देता है। ''इसी लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के सम्मिश्रण से रवीन्द्र नाथ ने रवीन्द्र संगीत का निर्माण किया था।''[2] बंगाल का लोक संगीत विविधता से परिपूर्ण है। यहाँ के प्रसिद्ध लोक गीतों में बाउल, भटियाली एवं कीर्तन आते हैं। बाउल यहाँ की एक लोकप्रिय गायन शैली है। बंगाल में बाउल सम्प्रदाय द्वारा गाये जाने वाले गीतों को बाउल गीत कहते हैं। बाउल गीतों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं प्रतीकात्मक विषयों के गीतों की प्रधानता रहती है। भटियाली का गायन यहाँ के नाविकों के द्वारा नदी पार करते समय किया जाता है। यह यहाँ के नाविकों की प्रमुख धुन है। सारी गीत को भी यहाँ प्रमुख गीत माना जाता है। इसका गायन भी नाविकों के द्वारा किया जाता है। भवईया गीत भी बंगाल का प्रमुख गीत है तथा इसका गायन समुद्र के तट पर रहने वाले लोगों द्वारा किया जाता है। भवईया एक विरह गीत है। इनके अतिरिक्त बंगाल प्रान्त में विभिन्न लोक नृत्यों का आयोजन किया जाता है। इन लोक नृत्यों में प्रमुख हैं– दुर्गा नृत्य, मयूर नृत्य, छाउ नृत्य, चन्द्रभागा नृत्य, पनघट नृत्य, सागर नृत्य तथा पुष्ट नृत्य आदि। यहाँ के लोक संगीत के साथ विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे– दोतारा, इकतारा, खोल, ढोल, तुरही, बांसुरी, श्रीखोल, घुंघर आदि।

डिजिटल तकनीक का अर्थ :–

डिजिटल तकनीक के अन्तर्गत किसी डेटा को इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस एवं सिस्टम के द्वारा प्रोसेस, स्टोर एवं ट्रांसमिट किया जाता है डिजिटल तकनीक में डेटा को 0 और 1 के रूप में संग्रहीत किया जाता है तथा प्रोसेस किया जाता है। ''डिजिटल तकनीक से तात्पर्य डिजिटल सिस्टम, उपकरण और डिवाइस के उपयोग से है जो इलेक्ट्रॉनिक रूप में डेटा को प्रोसेस, स्टोर और ट्रांसमिट करते हैं।''[3] डिजिटल तकनीक का विकास डिजिटल उपकरणों के निर्माण एवं प्रयोग के साथ हुआ। वर्तमान समय में विभिन्न डिजिटल उपकरण एवं तकनीकें प्रचलित हैं जैसे– स्मार्टफोन, कम्प्यूटर, इण्टरनेट, सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन, मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आदि।

भारतीय लोक संगीत पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव–

वर्तमान समय को डिजिटल युग के नाम से जाना जाता है। डिजिटल तकनीक के आगमन ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। आज मानव अपना प्रत्येक कार्य डिजिटल तकनीक के माध्यम से ऑन लाइन करता है। जैसेः– ऑन लाइन बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन रेलवे टिकट, ऑनलाइन शॉपिंग आदि। वर्तमान में लोक संगीत का क्षेत्र भी डिजिटल तकनीक के प्रभाव से अछूता नहीं है। भारतीय लोक संगीत पर डिजिटल तकनीक का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। वर्तमान समय में विभिन्न डिजिटल मंचों का निर्माण हुआ है जिसमें भारतीय लोक संगीत के कलाकारों को विश्व स्तर के श्रोताओं तक पहुँचने में सहयोग मिला है जैसे– You Tube, Spotify, Face book आदि। डिजिटल तकनीक ने भारत के युवाओं को भारत के पारंपरिक लोक संगीत से परिचित कराया है। इसके माध्यम से पारंपरिक लोक संगीत को एक नया रूप प्राप्त हुआ है। डिजिटल तकनीक ने लोक संगीत के संरक्षण को आसान बना दिया है। आज डिजिटल रिकॉर्डिंग के द्वारा लोक संगीत के पारम्परिक रूप को संरक्षित करना संभव हो गया है। इससे पूर्व लोक संगीत को सहेजने का कोई उचित माध्यम नहीं था ये केवल पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता था तथा मौखिक रूप से सीखा जाता था किन्तु आज डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से कोई भी लोक संगीत को सीख सकता है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से लोक संगीत की कला एवं इसके कलाकारों को एक नई पहचान मिली है।

निष्कर्ष

भारतीय लोक संगीत की कला अति प्राचीन एवं पारंपरिक है। डिजिटल तकनीक ने वर्तमान में इस कला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल तकनीक ने भारत के सभी क्षेत्रों के लोक संगीत को विकास की एक नई दिशा प्रदान की है। डिजिटल तकनीक ने भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल तकनीक के सहयोग से तथा विभिन्न डिजिटल मंचों के माध्यम से आज भारतीय लोक संगीत भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विष्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।

सन्दर्भ

1. [1,2]कुमार, अशोक 'यमन' संगीत रत्नावली, प्रकाशक–अभिषेक पब्लिकेशन्ज, एस0सी0ओ0 57–59 सेक्टर 17–सी चण्डीगढ़, पुनर्मद्रण– 2021 Pg. 549, 571
2. [3] डिजिटल टेक्नोलॉजी क्या है। आई जी आई ग्लोबल साइंटिफिक igi-global.com
3. उत्तर प्रदेश का लोक संगीत https://www.vedantu.com
4. पंजाब का लोक संगीत https://www.studyiq.com
5. भारत का लोक संगीत https:\\hindiarise.com
6. राजस्थान का लोक संगीत : जीवन संगीत की एक भावपूर्ण सिम्फनी https://utkarsh.com
7. महाराष्ट्र के लोक गीत : इसके प्रकार और महत्व के बारे में यहाँ जानें https://testbook.com
8. मराठी लोकगीत : प्रकार, सूची, इतिहास और अधिक https://www.Orchidsinternationalschool.com